ISSN 2349-834X

मिथिला-भारती

Mithilā Bhāratī

त्रैमासिक शोध-पत्रिका

भाग - 1 (N.S.) 2014 ई. अंक 1-4

संपादक

डा. शिव कुमार मिश्र

भैरव लाल दास

प्रकाशक

मैथिली साहित्य संस्थान, पटना

Website: www.maithilisahityasansthan.org

ISSN 2349-834X

मिथिला-भारती

Mithilā Bhāratī

त्रैमासिक शोध-पत्रिका

भाग -1 (N.S.) 2014 ई. अंक 1-4

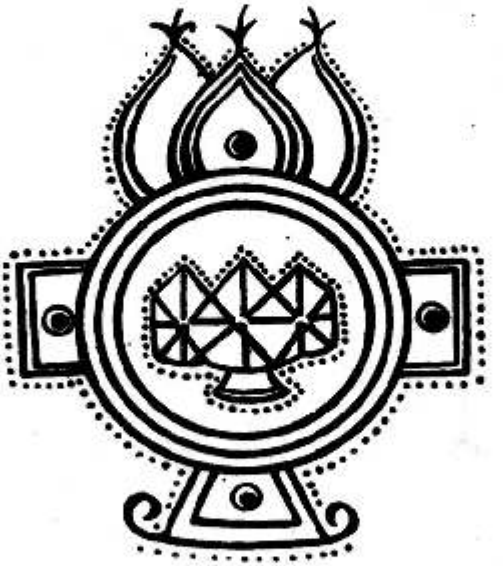

संपादक

डा. शिव कुमार मिश्र

भैरव लाल दास

प्रकाशक

मैथिली साहित्य संस्थान, पटना

Mithilā Bhāratī - Bilingual Quarterly Research Journal

Published by Maithili Sahitya Sansthan,
B-402, Shri Ram Kunj Apartment, Road No.-4,
Mahesh Nagar, P.O.- Keshri Nagar, Patna-800024
Phone : 09430606724, 09835884843
e-mail : blds412@gmail.com, skmishra2612@gmail.com

Editors: Dr. Shiva Kumar Mishra

Shri Bhairab Lal Das

© Maithili Sahitya Sansthan, Patna

Year- 2014.

ISSN 2349-834X

सहयोग राशि: ₹ 450 (चारि सए पचास टाका मात्र)
Price - Rs. 450 (Four Hundred Fifty only)

प्रकाशक : मैथिली साहित्य संस्थान, पटना

मुद्रक :
शोभा प्रिन्टिग प्रेस,
नया टोला, पटना - 800 004

सम्पादक-मण्डल

प्रो. डा. हेतुकर झा
प्रो. डा. इन्द्रकान्त झा
प्रो. डा. जयदेव मिश्र
प्रो. डा. रत्नेश्वर मिश्र
डा. चित्तरंजन प्रसाद सिन्हा
पं. भवनाथ झा

सम्पादक

डा. शिव कुमार मिश्र
श्री भैरव लाल दास

मैथिली साहित्य संस्थानक अधिकारी एवं कार्यकारिणीक सदस्य

अध्यक्ष – प्रो. डा. इन्द्रकान्त झा
उपाध्यक्ष – श्री राघवेन्द्र झा
कोषाध्यक्ष – डा. शिव कुमार मिश्र
सचिव – श्री भैरव लाल दास
संयुक्त सचिव – श्रीमती कल्पना कुमारी

कार्यकारिणी समिति

पं. भवनाथ झा
डा. अशोक कुमार सिन्हा
श्री सुनील कुमार कर्ण
श्री विनय कुमार झा
श्री भारतभूषण झा
श्रीमती संगीता कुमारी

सहयोगी रचनाकार

डा. सुनील कुमार झा
भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण,
पटना अंचल, पटना

डा. शंकरदेव झा
सम्पर्क : कबिलपुर, लहेरियासराय, दरभंगा
E-mail: dr.shankerdeojha@gmail.com

डा. चित्तरंजन प्रसाद सिन्हा
पूर्व निदेशक, काशी प्रसाद जायसवाल शोध संस्थान, पटना,
बिहार पुराविद् परिषद्, पटना

पं. भवनाथ झा
प्रकाशन एवं शोध पदाधिकारी,
महावीर मन्दिर, पटना
Email: bhavanathjha@gmail.com

डा. शिव कुमार मिश्र
बिहार रिसर्च सोसायटी,
पटना संग्रहालय, पटना
e-mail: skmishra2612@gmail.com

डा. अशोक कुमार सिन्हा
पटना संग्रहालय, पटना
e-mail: ashok.sinha68@gmail.com

प्रो. डा. रत्नेश्वर मिश्र
प्राचार्य एवं अध्यक्ष (सेवानिवृत्त),
इतिहास विभाग,
ल.ना. मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा।
सम्प्रति: 403, कर्पूरा प्रतिभा पैलेस,
गाँधीपथ, नेहरू नगर, पटना 800013
Email: profrmishra45@gmail.com

डा. प्रफुल्ल कुमार सिंह मौन
महनार, वैशाली

श्री भैरव लाल दास
बिहार विधान परिषद्, पटना
E-mail: blds412@gmail.com

डा. पंकज कुमार झा
रीडर, इतिहास विभाग
आर. के. एस. गवर्नमेन्ट डिग्री कालेज
पाथरदेवा, देवरिया, उ.प्र.

डा. अवनीन्द्र कुमार झा
ज्ञान भारती रोड, लक्ष्मीसागर, दरभंगा
E-mail: skmishra2612@gmail.com

Prof. Dr. Hetukar Jha
Former Professor & head,
Department of Sociology,
Patna University, Patna.

Dr. Krishna Kumar Mandal
Assistant Professor
Department of History,
Tilka Manjhi Bhagalpur University, Bhagalpur

Dr. Avinash Kumar Jha
Sr Assistant Professor,
Dept. of History,
J.N.L.College, Khagaul, Patna (Bihar)

रुद्रयामलक एक प्रक्षेपमे मिथिलाक इतिहासक सामग्री

भवनाथ झा

मिथिलाक इतिहास सँ सम्बन्धित एक पाण्डुलिपि हमरा लग अछि। ई हमरा समस्तीपुर जिलामे कल्याणपुरक समीप लदौरा गाममे अजित कुमार मेहता संस्कृत शिक्षण संस्थान पर जेबाक क्रममे सड़कक कातमे फेकल किछु अन्य कापी, किताब आ कागजक संग 2013 ई. में भेटल। एहि संग एकटा आर देवनागरीक पाण्डुलिपि रहैक। ई हस्तनिर्मित कागज पर मिथिलाक्षरमे लिखल पाण्डुलिपि थिक। एकर पुष्पिकामे कहल गेल अछि जे ई रुद्रयामलक एकटा अंश थिक जाहिमे तीर्थयात्राक विधान कएल गेल अछि। वर्तमान पाण्डुलिपिमे मात्र 6 पत्र अछि, जाहिमे प्रथम अध्याय सम्पूर्ण अछि आ द्वितीय अध्याय खण्डित छैक। प्रथम अध्यायक पुष्पिका सँ ज्ञात होइत अछि जे प्राचीन जीर्ण पाण्डुलिपि सँ संशोधन कए 1310 साल अर्थात् 1901 ई.मे मार्ग शुक्ल एकादशी दिन तेघरा ग्रामवासी जीवनाथ एकरा लिखलनि। एकर लेखनमे होल्डर कलम आ कम्पनीक बनल रोशनाइक व्यवहार भेल अछि। एकर आधार तूर सँ निर्मित पट थिक, जे 10 इंच नाम आ 4 ईंच चाकर अछि, जाहि पर 8.5 ईंच नाम आ 2.5 ईंच चाकर स्थान पर प्रतिपत्र 9 पंक्ति लिखल अछि। एहिमे प्रति पंक्ति 32-33 अक्षर अछि। एकर प्रथम अध्यायमे 79 श्लोक अछि आ दोसर अध्यायमे 16 श्लोकक बाद खण्डित भए जाइत अछि।

एहिमे वर्णित कथामे कहल गेल अछि जे पाण्डव नामक गाममे सुधामा नामक एकटा व्यापारी रहथि। जखनि ओ बूढ़ भेलाह तँ तीर्थयात्राक मोन बनाओलन्हि। तीर्थयात्राक विधान बुझबा लेल ओ अपन गुरु लग पहुँचलाह। ओ गुरु हुनका तीर्थयात्राक विधान बुझबैत मिथिलाक एकटा राजाक तीर्थयात्रा वृत्तान्त सुनौलखिन्ह। एहि वृत्तान्तक अनुसार ओ राजा जखनि अपन घर सँ तीर्थयात्राक लेल निकललाह तँ सभसँ पहिने गंगाकातमे शाल्मलीग्राम स्थित शाल्मलीवन पहुँचलाह, जतए कतेको ऋषि-मुनि कें तपस्या करैत देखि हुनक मन ओतए रमि गेल आ ओहि शाल्मलीवनमे गंगाकातमे चारि टा मठ (मन्दिर) स्थापित कएल जाहिसँ ओहि स्थानक नाम चतुर्मठ तीर्थ भए गेल। ओतए सँ राजा नाव सँ गंगाक धाराक विरुद्ध काशी गेलाह, प्रयाग गेलाह, फेर घुमि कए सरयू आ गंगाक संगम पर वामनतीर्थमे विष्णुयज्ञ कएल आ तखनि सरयूक बाटें अयोध्या गेलाह ओतए जन्मस्थान मन्दिरमे सोनाक घंटी चढ़ाए फेर गंगा सरयूक संगम पर आबि अपन देश घुरैत काल चतुर्मठ तीर्थ पहुँचि गेलाह। दुर्योग सँ ओहि दिन हुनका समक्ष एकटा घटना घटल। ओ ओहि तीर्थ पर पहुँचले रहथि कि उत्तर दिशा सँ जनताक क्रन्दनक स्वर आएल। समाचार

बुझबाक लेल पठाओल गेल दूत आबि कए कहलक जे किछु तुरुष्क आबि कए जनता कें लूटि रहल अछि आ सरेआम हत्या कए रहल अछि। राजा तीर्थयात्राक थाकल रहथि तें अपना कें कोनो बलप्रयोग करबासँ असमर्थ मानैत चिन्तित भेलाह। एहि पर ओतए रहनिहार ऋषिगण हुनका सान्त्वना देलखिन्ह जे ई शाल्मलीवनक तीर्थ परम पवित्र अछि। एतए प्राचीन काल में समुद्र-मन्थनक पश्चात् अमृत-घट लए भागल दैत्य अपनहिँ भ्रान्त भए नष्ट भेल आ एतहिं भगवान् विष्णु मोहिनी रूप धारण कए अमृत बँटलन्हि, जेकर कथा स्वयं भगवान् शंकर देवी पार्वती सँ कहने छथि। ई सूनि राजाक मन शान्त भेल आ ओ अपन घर घुरलाह। दोसर अध्यायमे वैद्यनाथ-यात्राक विधान अछि। एहिमे एकटा विप्र दम्पतीक कथा अछि जे पुत्रक आकांक्षासँ दूनू गोटे अजगवीनाथ सँ गंगाजल लए यात्रा प्रारम्भ करैत छथि। पहिल दिन साँझमे ओ लोकनि एकटा एहन नदीक तट पर पहुँचैत छथि जाहिमें जल बहुत कम छैक। एहि स्थल पर आबि ई पाण्डुलिपि खण्डित भए जाइत अछि।

एहि रचनाक अध्ययन कएला पर स्पष्ट होइत अछि जे एहिमे उल्लिखित पाण्डव ग्राम वर्तमान समस्तीपुर जिलाक पाँड़ थिक जे प्राचीन कालमे व्यापार केन्द्र छल होएत। एकर लग मे स्थाण्वीश्वर शिवक नाम आएल अछि। वर्तमानमे विद्यापतिनगर लग जे चौमथ अथवा चमथा घाट कहबैत अछि ओ मूलरूप सँ चतुर्मठ घाट थिक जकर नामकरण ओतए स्थापित चारि मन्दिर (मठ) क कारणें भेल। दोसर बात जे ओ क्षेत्र सिमरक गाछ सँ घेराएल सघन वन छल ओतए जे किछु गाम छल ओकरो नाम शाल्मलीग्राम छलैक।

एहि रचनाक कालनिर्धारण करैत काल हमरा लोकनि कें हरदम ई ध्यान राखए पड़त जे कहबाक लेल तँ ई **रुद्रयामलक** अंश थिक मुदा वस्तुतः ई अंश परवर्ती कालमे लिखल गेल एकटा स्वतन्त्र रचना थिक जे कालक्रमें रुद्रयामलक अंशक रूपमे प्रचारित कएल गेल। एहि रचनामे स्पष्ट रूप सँ तुरुष्कक आक्रमणक उल्लेख अछि जे 12म सँ 15म शतीक बीचक घटना थिक आ रुद्रयामलक रचना 11म शती सँ पहिनहि भए चुकल छल। डी. सी. सरकार[1] अपन ग्रन्थ **द शाक्त पीठाज्** में लिखैत छथि जे **ब्रह्मयामलक** एकटा पाण्डुलिपि जे 1052 ईस्वीक लिखल अछि जाहिमे **रुद्रयामलक** उल्लेख भेल अछि।[1] एतावता रुद्रयामल अपन वास्तविक स्वरूपमे 11म शताब्दी सँ पहिनहि रचल जा चुकल छल जाहि कालमे तुरुष्कक आक्रमण नहि भेल रहए।

एहि अंशक रचनाकाल निर्धारणक लेल एतए दू टा स्पष्ट संकेत अछि। अयोध्यामे रामजन्मभूमि पर मंदिरक उल्लेख, जतए ओ राजा सोनाक घंटी चढ़बैत छथि आ माताक

---

1. D.C. Sircar, **The Sākta Pithas**, Motilal Banarasidass, Reprint Delhi, 1998, p. 17, note 4- "The Rudrayamala is mentioned in the Brahmayamala, a manuscript of which was copied in 1052A.D.",

कोरामे स्थित रामक मूर्तिक दर्शन करैत छथि। एखनि धरिक शोधक अनुसार 1525 सँ 1530 ई.क बीच बाबरक द्वारा ई मन्दिर तोड़ल गेल। संगहि एतए वैद्यनाथक मन्दिरक स्थान पर गुफाक उल्लेख अछि जखनि कि 1596 ईस्वीमे गिद्धौरक राजा पूरणमल्ल द्वारा वर्तमान मन्दिरक निर्माण कराओल गेल।[2] एतावता ई रचना 16म शतीसँ पहिलुक स्थितिक वर्णन करैत अछि।

अत: एहि रचनाक कालसीमा 12म सँ 15म शताब्दी मानल जा सकैत अछि। सँगहिं एकरा स्थानीय प्रक्षेप अथवा विकास कहि सकैत छी। आर्षग्रन्थक परम्परामे एहन प्रक्षेप कोनो नवीन घटना नहि थिक। रुद्रयामलक अंशक रूपमे कतेको एहन रचना हमरा लोकनिक समक्ष आइ प्रचलित अछि जे कोनो प्रकारें मूल रुद्रयामलक अंश नहि भए सकैत अछि। उदाहरणार्थ 'अयोध्या-माहात्म्य' कें लए सकैत छी। एकर पाँच अध्यायक एक संस्करण भेल[3] तकर बाद 16 अध्यायक[4] संस्करण बनल आ फेर 30 अध्यायक[5] रूपमे ई ग्रन्थ पल्लवित भेल कालक्रमें एहिमे वर्णनक विस्तार होइत गेल। ई सभ संस्करण रुद्रयामलोक्त मानल गेल आ एतेक धरि जे 17म शतीमे जखनि लालदास **अवधविलास** नामक महाकाव्यक रचना कएल तँ एकरा रुद्रयामलक अंश मानलनि।[6] एहिना **दुर्गासप्तशती**क संग पाठ करबा लेल प्रकाशित चण्डीशापोद्धार सेहो रुद्रयामलेक अंश मानल जाइत रहल अछि।[7] वस्तुत: आर्ष ग्रन्थक ई विकास-मार्ग थिक। एही बाटे पुराण-साहित्य अपन विशाल रूप धारण केलक। धार्मिक कथा आ प्रवचन सूनि संस्कृतक रचनाधर्मी विद्वान् लोकनि जे कथा, पूजा-पद्धति आदि श्लोकबद्ध कएल ओ कालक्रमे कोनो ने कोनो पुराण अथवा आगमक-ग्रन्थसँ जुड़ि गेल। आ तें भविष्य-पुराणमे आइ हमरा लोकनिकें प्रतिसर्ग-पर्व

2. Rajendralala Mitra, "On the Temples of Deoghar, ," **Journal of the Asiatic Society of Bengal**, vol. LII, 1883, pp.. 177-78.
3. Hans Bakker, **Ayodhyā**, Egbert Forsten Publishers, 1986, एतय एहि ग्रन्थक 5 अध्याय वला संस्करणक पाठ प्रकाशित अछि।
4. Collection of the Bhandarakar Oriental Research Institute (BORI) in Poona, No 112 of 1891-95. No title page. Devanagari script 29 folios containing 16 Adhyayas: 11 lines to a page; 50 aksharas per line; (hand-made) paper; black Indian ink; regular and clear handwriting; one scribe.
5. बरेलीक रामनारायण द्वारा कएल एहि संस्करणक अंग्रेजी अनुवाद **Journal of the Asiatic Society of Bengal,** 1875, मे प्रकाशित अछि।
6. "जामल रुद्र कथा इह पाई। लालदास तसि कहि समुझाई। जामल रुद्र अनंतहि होई। कल्प कल्प के भेद है सोई।" दोहा 87, चन्ददास साहित्य शोध संस्थान, बाँद।
7. इति रुद्रयामले चण्डीशापविमोचनं सम्पूर्णम्।

भेटैत अछि जाहिमे मध्यकालीन भारतक कतिपय संत रामानन्द,[8] कबीर,[9] रैदास,[10] नामदेव[11] आदि वर्णित छथि आ एहि अंशमे रविवारक लेल सण्डे, आ साठि संख्याक लेल सिक्स्टीक प्रयोग सेहो पबैत छी।[12]

एहने एकटा रचनाक रूपमे हमरा लोकनि **मिथिला-माहात्म्य** कें सेहो पबैत छी, जे **बृहद्विष्णुपुराणक** अंश मानल गेल अछि।[13] 15 शतीमे पक्षधरक हस्तलिखित **विष्णुपुराणक** मैथिल संस्करण[14] हमरा उपलब्ध अछि,[15] मुदा जाबत धरि वर्तमान उपलब्ध विष्णुपुराणक प्रति सँ एकरा मिलाओल नहि जाइछ ता धरि ई कहल नहि जा सकैत अछि जे मिथिला-माहात्म्यक अंश विष्णुपुराणक थिक। आ बृहद्विष्णुपुराणक की स्वरूप अछि से ज्ञात नहि।

एकटा अन्य रचना **रुद्रयामलोक्तामृतीकरणप्रयोग**[16] सेहो हालहिंमे दरभंगा सँ डा. विद्येश्वर झा एवं डा. श्रवण कुमार चौधरीक सम्पादकत्वमे प्रकाशित भेल अछि। इहो अंश प्रकृत तीर्थयात्राविधिक समकक्ष परवर्ती रचना थिक जे **रुद्रयामलक** अंशक रूपमे कहल गेल अछि। मुदा एकरो आन्तरिक साक्ष्य एकरा 12म सँ 15म शतीक मध्यक रचना सिद्ध करैत अछि। कारण जे एहूमे भयंकर आक्रान्ताक द्वारा बलपूर्वक लोक कें दास बनएबाक उल्लेख भेल अछि। प्रकृत तीर्थयात्राविधिमे प्रथम अध्यायक अन्तमे भगवान् शंकर द्वारा पार्वती कें शाल्मलीतीर्थक माहात्म्य सुनएबाक जे बात आएल अछि ओ वस्तुतः इएह रुद्रयामलोक्तामृतीकरणप्रयोग थिक। मुदा तीर्थयात्राविधि सँ प्राचीन ई रचना बुझाइत अछि, कारण जे जाहि ठाम **रुद्रयामलोक्तामृतीकरणप्रयोग** केवल सघन वनक चर्चा करैत अछि[17] ओतए तीर्थयात्राविधिमे चारि मन्दिरक स्थापना, चतुर्मठ तीर्थ आ तीर्थपुरोहित लोकनिक वासक उल्लेख भेल अछि, जे परवर्ती विकास थिक। एतबा तँ निश्चित जे ई चौमथ घाट विद्यापति सँ पहिनहि सँ छल तें कथाक अनुसार विद्यापति एही घाटक लेल विदा भेल रहथि आ बाटहिंमे हुनक देहावसान भए गेल, जे स्थान एखनि विद्यापतिनगरक रूपमे चमथा घाट सँ उत्तर अछि।

---

8. **भविष्य–पुराण**, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, द्वितीय खण्ड 2006, प्रतिसर्ग पर्व, चतुर्थ खण्ड, अध्याय 7.
9. **उपरिवत्**, अध्याय 17.
10. **उपरिवत्**, अध्याय 18.
11. **उपरिवत्**, अध्याय 16, श्लोक सं. 51.52.
12. **उपरिवत्**, प्रतिसर्ग पर्व, प्रथम खण्ड, अध्याय 5, श्लोक सं. 37– रविवारे च सण्डे च फाल्गुने चैव फर्वरी। षष्टिश्च सिक्स्टी ज्ञेया तदुदाहारमीदृशम्।।
13. पं. रामचन्द्र झा द्वारा सम्पादित **वर्षकृत्य**, द्वितीय भागमे प्रकाशित, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी।
14. मिथिला क्षेत्रमे लिखल गेल आर्ष–ग्रन्थक पाण्डुलिपि।
15. बिहार रिसर्च सोसायटी, पटना संग्रहालय, पटना मे सुरक्षित।
16. **रुद्रयामलोक्तामृतीकरणप्रयोग**, दरभंगा, 2011.
17. **तदेव**, श्लोक सं. 58–63.

एहि तीर्थयात्राविधिमे राजा बलिक राजधानी गंगा आ सरयूक संगम पर मानल गेल अछि, जे वर्तमानमे बलिया सँ अभिन्न मानल जा सकैत अछि। महाकवि विद्यापति सेहो **भू-परिक्रमणम्**मे एकरा बलिग्राम मानने छथि आ एहि क्षेत्र कें वामनावतार विष्णुक क्षेत्र मानने छथि।[18] तीर्थयात्राविधिमे सेहो राजा द्वारा एहि स्थान पर विष्णुयज्ञ करबाक उल्लेख भेल अछि, जाहिमे मन्त्रक रूपमे 'इदं विष्णुर्विचक्रमे' इत्यादिक प्रयोग वामनावतार विष्णुक कथाक स्पष्ट उल्लेख करैत अछि।[19]

एहिसँ सिद्ध होइत अछि जे आर्षग्रन्थमे प्रक्षेप पाबि हमरा लोकनिकें चौंकबाक काज नहि ओ भलें अपन तथाकथित सन्दर्भ-ग्रन्थक समान सम्मान्य नहि हो किन्तु स्थानीय इतिहासक एकटा स्रोतक रूपमे महत्त्वपूर्ण अवश्य अछि। एहि पंक्तिक लेखक कें एहने एकटा अंश **साम्ब-पुराण**क हस्तलेखमे भेटलनि जे अंश कतहु अन्यत्र प्रकाशित नहि छलैक आ ओहिमे मगध क्षेत्रमे मग अथवा शाकद्वीपी ब्राह्मणक आगमनक कथा आ सूर्य-उपासनाक प्रचार पर प्रचुर सामग्री छैक।[20] एहि तरहें आर्ष-ग्रन्थक स्थानीय पाठमे स्थानीय इतिहासक कतेको सूत्र भेटबाक प्रबल संभावना अछि।

एतावता, तीर्थयात्राविधिक एहि पाण्डुलिपिक महत्त्व बढ़ि जाइत अछि। कथाक विस्तार इहो ध्वनित करैत अछि जे एकर रचना मिथिलाक दक्षिणी सीमा पर गंगाकातमे भेल होएत। ई क्षेत्र प्राचीन मिथिलामे धार्मिक दृष्टि सँ महत्त्वपूर्ण छल होएत जकर संकेत सेहो एतए भेटैत अछि।

एहि खण्डित पाण्डुलिपिक दुइ पत्रक छाया एतए देल जा रहल अछि।

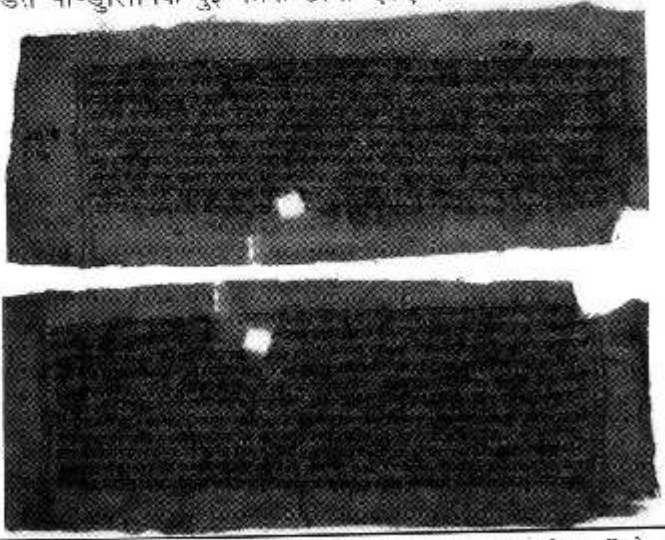

18. ''बलिग्रामश्च तत्रैव सरयूसंगमान्तिके।। ...त्रिविक्रमस्थले हि मुनयः सन्ति तटिनो तटे।।'' **भू-परिक्रमणम्**, विद्यापति, संपादक डा. वासुकीनाथ झा, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, 1987, पृ. 41.
19. ई मन्त्र एना अछि। ''इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूलनस्य पांशुले'' एतए विष्णु द्वारा तीन डेग देबाक वर्णन अछि जे वामनावतारक मुख्य कथा थिक।।
20. **साम्ब-पुराण**, सम्पादक एवं प्रकाशक श्री गौरीकान्त झा, 2011, अध्याय 26, श्लोक 24 सँ 82 धरि।

एहि ठाम तीर्थयात्राविधिक पाठ मैथिलीभाषामय अनुवादक संग देल जा रहल अछि।

नमः शिवाय।

पुरा वैदेहकः कश्चित् सुशीलः श्रद्धयान्वितः।
वाणिज्यकुशलः श्रीमान् पाण्डवग्रामसंस्थितः।।1।।
पुत्रपौत्रादिसम्पन्नः वार्द्धक्ये धर्मकांक्षया।
जनैः परिवृतो रम्यं तीर्थं गन्तुं मनो दधे।।2।।
प्रातरेव गुरुं गत्वा प्राह नम्रो द्विजं सुधीः।।

प्राचीन कालमे एकटा सुशील, श्रद्धावान्, धनवान् आ बनियौटीमे रेहल-खेहल मैथिल पाण्डव नामक गाममे रहथि। बेटा आ पौत्र सँ सम्पन्न भए बुढारीमे धर्मक इच्छासँ परिजनक संग सुन्दर तीर्थ सभ दिस जेबाक मोन भेलन्हि तँ भिनसरे भेने ओ अपन गुरु लग जाए विनयपूर्वक हुनका सँ पुछलथिन्ह।

सुधामा उवाच

मया गुरो प्रयत्नेन प्रभूतं धनमर्जितम्।
देवपितृद्विजानां च कृपया सकलं मम।।3।।
पुत्राः धर्मरताः सन्ति कुटुम्बभरणे रताः।
मानयन्ति च मां भक्त्या द्वितीयमिव देवकम्।।4।।
गृहे सुखेन तिष्ठामि यथा स्वर्गे प्रजापतिः।
अर्जिता प्रथमे विद्या द्वितीये धनमर्जितम्।।5।।
तृतीये वयसि प्राप्ते धर्मो लभ्यो मया गुरो।
सेवमानो नरस्तीर्थमिहामुत्र महीयते।।6।।
निःकामो लभते ब्रह्मपदं निर्व्वाणसंज्ञकम्।
तदहं गन्तुमिच्छामि तीर्थानि भुवि सादरम्।।7।।
गन्तव्यानि तीर्थानि लोके कानि कथं गुरो।
तदहं श्रोतुमिच्छामि धर्म्यन्तव मुखाम्बुजात्।।8।।

सुधामा बजलाह- हे गुरुदेव, हम बड़ जतन सँ बहुत धन अरजलहुँ। देव, पितर आ ब्राह्मणक कृपा सँ हमरा लग आइ सभ किछु अछि। हमर सभ बेटा धार्मिक छथि, अपन परिवारक पालनमे लागि गेल छथि आ हमरा तँ भक्ति सँ दोसर देवतेक मूर्ति समान मानैत छथि। हम अपन घरमे सुखसँ रहैत ओहिना रहैत छी जेना स्वर्गमे प्रजापति रहैत छथि। हम अपन प्रथम वयसमे विद्या अरजल, दोसर वयसमे धन अरजल। तेसर वयस भेलापर धर्म अरजए चाहैत छी। जे तीर्थाटन करैत छथि ओ एहि लोक ओ परलोकमे महान् होइत छथि, किन्तु निष्काम भाव सँ जँ तीर्थाटन कएल जाए तँ निर्वाण नामक ब्रह्मपदक भागी होइत छथि। तें हम एहि पृथ्वीपर आदरपूर्वक तीर्थाटन करए चाहैत छी। हे गुरुदेव, एहि लोकमे

एहि ठाम तीर्थयात्राविधिक पाठ मैथिलीभाषामय अनुवादक संग देल जा रहल अछि।

नमः शिवाय।

पुरा वैदेहकः कश्चित् सुशीलः श्रद्धयान्वितः।
वाणिज्यकुशलः श्रीमान् पाण्डवग्रामसंस्थितः।।1।।
पुत्रपौत्रादिसम्पन्नः वार्द्धक्ये धर्मकांक्षया।
जनैः परिवृतो रम्यं तीर्थं गन्तुं मनो दधे।।2।।
प्रातरेव गुरुं गत्वा प्राह नम्रो द्विजं सुधीः।।

प्राचीन कालमे एकटा सुशील, श्रद्धावान्, धनवान् आ बनियौटीमे रेहल-खेहल मैथिल पाण्डव नामक गाममे रहथि। बेटा आ पौत्र सँ सम्पन्न भए बुढारीमे धर्मक इच्छासँ परिजनक संग सुन्दर तीर्थ सभ दिस जेबाक मोन भेलन्हि तँ भिनसरे भेने ओ अपन गुरु लग जाए विनयपूर्वक हुनका सँ पुछलथिन्ह।

सुधामा उवाच

मया गुरो प्रयत्नेन प्रभूतं धनमर्जितम्।
देवपितृद्विजानां च कृपया सकलं मम।।3।।
पुत्राः धर्मरताः सन्ति कुटुम्बभरणे रताः।
मानयन्ति च मां भक्त्या द्वितीयमिव देवकम्।।4।।
गृहे सुखेन तिष्ठामि यथा स्वर्गे प्रजापतिः।
अर्जिता प्रथमे विद्या द्वितीये धनमर्जितम्।।5।।
तृतीये वयसि प्राप्ते धर्मो लभ्यो मया गुरो।
सेवमानो नरस्तीर्थमिहामुत्र महीयते।।6।।
निःकामो लभते ब्रह्मपदं निर्व्वाणसंज्ञकम्।
तदहं गन्तुमिच्छामि तीर्थानि भुवि सादरम्।।7।।
गन्तव्यानि तीर्थानि लोके कानि कथं गुरो।
तदहं श्रोतुमिच्छामि धर्म्यन्तव मुखाम्बुजात्।।8।।

सुधामा बजलाह- हे गुरुदेव, हम बड़ जतन सँ बहुत धन अरजलहुँ। देव, पितर आ ब्राह्मणक कृपा सँ हमरा लग आइ सभ किछु अछि। हमर सभ बेटा धार्मिक छथि, अपन परिवारक पालनमे लागि गेल छथि आ हमरा तँ भक्ति सँ दोसर देवतेक मूर्ति समान मानैत छथि। हम अपन घरमे सुखसँ रहैत ओहिना रहैत छी जेना स्वर्गमे प्रजापति रहैत छथि। हम अपन प्रथम वयसमे विद्या अरजल, दोसर वयसमे धन अरजल। तेसर वयस भेलापर धर्म अरजए चाहैत छी। जे तीर्थाटन करैत छथि ओ एहि लोक ओ परलोकमे महान् होइत छथि, किन्तु निष्काम भाव सँ जँ तीर्थाटन कएल जाए तँ निर्वाण नामक ब्रह्मपदक भागी होइत छथि। तें हम एहि पृथ्वीपर आदरपूर्वक तीर्थाटन करए चाहैत छी। हे गुरुदेव, एहि लोकमे

कोन तीर्थ जेबाक चाही आ केना जेबाक चाही ई धर्मक बात हम अहाँक मुखकमल सँ सुनए चाहैत छी।

गुरुरुवाच

सत्यमुक्तं त्वया भाव कर्त्तव्यं तीर्थसेवनम्।
भवे भवे कृतं पापं जीर्यते तीर्थसेवनात्।।9।।
निःपापास्ततो यान्ति पदं निर्व्वाणसंज्ञकम्।
पुनरागमनं नैव यतो भवति भूतले।।10।।

गुरु बजलाह- हँ बाउ, अहाँ ठीके कहलहुँ जे तीर्थक सेवन करबाक चाही। जन्म-जन्मान्तर में कएल गेल पाप तीर्थसेवन सँ नष्ट भए जाइत अछि। तखन ओ व्यक्ति पापरहित भए ओहि निर्वाणपद कें प्राप्त करैत छथि, जतए गेलाक बाद फेर पुनर्जन्म नहि होइत अछि।

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि मुक्तिक्षेत्राणि भूतले।
काशी मायापुरी कांची मथुरा रामजन्मभूः।।11।।
द्वारावती च नगरी सर्वासामुत्तमोत्तमाः।
अवन्तिका च मुनिभिः सम्प्रोक्ता मोक्षदायिका।।12।।
पूज्या शक्तिमयी देवी विदेहानां सदाशिवा।
मथुरायां वासुदेवो ह्ययोध्यायां च राघवः।।13।।
काश्यां सदाशिवः पूज्यः द्वारिकायां सचक्रधृक्।
गंगाकूले हरिहरौ सदा पूज्यौ विशेषतः।।14।।
गंगे देवि नमस्तुभ्यं वासुदेवपदाग्रजे।
महेश्वरजटाजूटारण्यवासिनि जाह्नवि।।15।।
तवाराधनमात्रेण भूयाद्देवि जगद्धितम्।
मन्त्रेणानेन गंगायां स्नात्वा दानमाचरेत्।।16।।
ततः शुद्धो व्रजेत् सम्यक् स्वेष्टदेवमनुस्मरन्।
नैकाकी क्वचिद् गच्छेन्न भुंजीत परान्नकम्।।17।।
न्यायोपार्जितवित्तेन साधनेन व्रजेत् सुधीः।
गृही न प्रतिगृह्णीयाद् मार्गे वा तीर्थभूमिसु।।18।।
संन्यासित्वमवाप्नोति तथारुढच्युतिं पुनः।
गन्धादिसज्जापुरुषैर्विधातव्या न पर्यटे।।19।।
स्त्रीभिः सौभाग्यचिह्नानि धारणीयानि यत्नतः।
रात्रौ नैव भोक्तव्यं पर्यंकशयनं त्यजेत्।।20।।
बाहुभ्यां जानुनी बद्ध्वा पथि नोपविशेन्नरः।।

आब हम एहि पृथ्वी पर मुक्तिक्षेत्रक वर्णन करैत छी। काशी, हरिद्वार, पुरी, कांची, मथुरा, अयोध्या आ द्वारका ई नगरी सभ सँ श्रेष्ठ अछि। संगहि, अवन्तिका कें सेहो

मुनिलोकनि मुक्तिक नगरी कहैत छथि। शक्तिमयी गौरी मैथिलक लेल सदा पूजनीया छथि। मथुरामे वासुदेव, अयोध्यामे श्रीराम, काशीमे सदाशिव आ द्वारकामे चक्रधारी विष्णु सदा पूजनीय छथि। गंगाक तटपर शिव एवं विष्णु दुनू पूज्य छथि। 'भगवान् विष्णुक चरणक अगिला भाग सँ निकलनिहारि एवं महादेवक जटा रूपी वन में विचरण कएनिहारि हे गंगे, अहाँकें प्रणाम। अहाँक आराधना मात्र कएला सँ संसारक कल्याण होअए।' एहि मन्त्रसँ गंगामे स्नान कए दान करबाक चाही। तकर बाद शुद्ध भए अपन इष्टदेवक स्मरण करैत जएबाक चाही। तीर्थयात्रा एसकर नहि करी, दोसराक अन्न ग्रहण नहि करी, न्यायपूर्वक उपार्जित धनक उपयोग करैत बुद्धिमान् यात्रा करथि। गृहस्थ बाट में वा तीर्थस्थानमे दान नहि लेथि किएक तँ दान लेलासँ पहिने ओ संन्यासी बनि जाइत छथि आ बादमे आरूढच्युत भए जाइत छथि। तीर्थयात्रामे पुरुष तेल-फुलेल आदिक उपयोग नहि करथि किन्तु स्त्रीगण सौभाग्य-चिह्न जतनसँ धारण करथि। रातिमे भोजन नहि करी, पलँग (खाट-चौकी आदि सेहो) पर नहि सूती आ दुनू हाथसँ ठेहुन बाँधि बाटमे नहि बैसी।

सुधामोवाच

प्रथमं कुत्र गन्तव्यमस्माभिर्गुरुसत्तम।
असंख्येषु सुतीर्थेषु भूतले सत्सु विस्तृते।।21।।

सुधामा बजलाह। हे गुरु, एहि विशाल पृथ्वी पर तँ अनगिनत सुन्दर तीर्थ अछि, ओहि सभमे सँ पहिने कतए जेबाक चाही।

गुरुरुवाच

स्वगृहान्निकस्थं वै व्रजेद्देवालयं सुधीः।
तत्र पूजा प्रकर्त्तव्या प्रथमं धर्मकांक्षिभिः।।22।।
स्वग्रामान्निकटस्था या काचित् स्यात् सरिद्वरा।
सैव पुण्यतमा लोके कथिता मनिपुंगवैः।।23।।
गत्वा तस्यास्तटं धीमान् रात्रिमेकां व्यतीत्य च।
व्रजेदन्यानि तीर्थानि विशुद्धः श्रद्धयान्वितः।।24।।
तत्तीर्थं सम्परित्यज्य सर्वतीर्थानि वा व्रजेत्।
नैव स लभते पुण्यं सर्वं भवति निःफलम्।।25।।
तस्माच्छेमलग्रामं जाह्नवीतीरसंस्थितम्।
शाल्मलीवनसंच्छन्नं मुनिभिः सेवितं शुभम्।।26।।
वैदेहकैः सदा+++++व्यं [21] प्रथमं त्वया।
स्थाण्वीश्वरं शिवं नत्वा गच्छ गंगातटं प्रति।।27।।

गुरु बजलाह। धर्म चाहनिहार बुद्धिमान् व्यक्ति अपन घरसँ सभसँ लगक मन्दिरमे सभसँ पहिने पूजा करथि। अपन गाम क लग में जे कोनो पैघ नदी हो ओकरे श्रेष्ठ मुनि

21. सुझाओल गेल पाठ- सदासेव्यं गन्तव्यं। सदिखन सेवित स्थान, जतय जेबाक चाही।

लोकनि पुण्यतमा कहने छथि। ओकर तीर पर जाए बुद्धिमान् व्यक्ति एक राति ओतहि बिताए श्रद्धाक संग आन तीर्थ लेल प्रस्थान करथि। ओहि तीर्थक त्याग कए जँ केओ आन सभ तीर्थ क यात्रा करैत छथि तँ हुनका ओकर पुण्य नहि भेटैत छनि, सभ किछु निरर्थक भए जाइत अछि। तें अहाँ गंगाक तटपर स्थित शेमलग्राम जाउ, जे सिगरक गाछ सँ भरल अछि आ ओतए मुनिलोकनिक वास अछि। ओ मैथिलक द्वारा सदिखन सेवनीय अछि। तें स्थाण्वीश्वर शिवक पूजा कए अहाँ गंगाकात जाउ।

सुधामोवाच

सुर++++ग्रामः[22] सुरम्यं जाह्नवीतटम्।
रम्या सरिद्वरा तत्र धर्मस्तिष्ठति देहवान्।।28।।
केनेदं निर्मितं तीर्थं केनेदं ख्यापितं भुवि।
तत्सर्वं श्रोतुमिच्छामि पुरावृत्तं शुभप्रदम्।।29।।

सुधामा बजलाह। (---) गंगाक तट रमणीय अछि। ओतए महानदी गंगा रमणीय अछि। ओतए धर्मक साक्षात् वास अछि। ई तीर्थ कें स्थापित कएल आ के एकरा संसार में प्रसिद्ध कएल, ई सभटा शुभ पुरातन कथा हम सुनए चाहैत छी।

गुरुरुवाच

कश्चिद् वैदेहको राजा प्रजापालनतत्परः।
धर्मिष्ठः साधुशीलश्च बभूव भुवि विश्रुतः।।30।।
वार्द्धक्ये ज्येष्ठपुत्राय राज्यं दत्वा विधानतः।
गन्तुं तीर्थानि भूयांसि मुक्तिक्षेत्राणि भूतले।।31।।
स च विप्रं पुराणज्ञं धर्मकर्मबहुश्रुतम्।
कृत्वा सहायं प्रययौ तीर्थानि सपरिच्छदः।।32।।

गुरु बजलाह। कोनो समयमे एकटा धार्मिक एवं नीक स्वभाव वला पृथ्वीपर विख्यात मैथिल राजा रहथि जे नीक जकाँ प्रजाक पालन करैत रहथि। जखनि ओ बूढ़ भेलाह तँ अपन जेठ बेटा कें विधानपूर्वक राज्य दए मुक्ति देनिहार तीर्थमे जेबाक इच्छा कएलनि। ओ पुराण जननिहार आ धर्म-कर्मक ज्ञाता विद्वान् ब्राह्मण कें संग लए अपन परिजनक संग तीर्थयात्रा पर निकललाह।

शाल्मली तरुसंच्छन्ने स्नानार्थं समुपागतः।
दृष्ट्वाश्रमान् मुनीनां तु रेमे स मन्त्रिभिः सह।।33।
त्रिरात्रं संव्यतीयाय तत्र कृत्वा निजाश्रमम्।
तेन मार्गाश्च कृताः तीर्थिकाश्च प्रतिष्ठिताः।।34।।
तस्माच्छेमलग्रा+ भूतले[23] सुप्रतिष्ठितः।
चत्वारो मठास्तत्र राज्ञा निर्मिताः शुभाः।।35।।

---

22. सुझाओल गेल पाठ- सुरम्यः शेमलग्रामः। शेमलग्राम रमणीय अछि।
23. सुझाओल गेल पाठ- तस्माच्छेमलग्रा+ भूतले। तें पृथ्वी पर शेमलग्राममे।

लोकनि पुण्यतमा कहने छथि। ओकर तीर पर जाए बुद्धिमान् व्यक्ति एक राति ओतहि बिताए श्रद्धाक संग आन तीर्थ लेल प्रस्थान करथि। ओहि तीर्थक त्याग कए जँ केओ आन सभ तीर्थ क यात्रा करैत छथि तँ हुनका ओकर पुण्य नहि भेटैत छनि, सभ किछु निरर्थक भए जाइत अछि। तें अहाँ गंगाक तटपर स्थित शेमलग्राम जाउ, जे सिगरक गाछ सँ भरल अछि आ ओतए मुनिलोकनिक वास अछि। ओ मैथिलक द्वारा सदिखन सेवनीय अछि। तें स्थाण्वीश्वर शिवक पूजा कए अहाँ गंगाकात जाउ।

सुधामोवाच

सुर++++ग्रामः[22] सुरम्यं जाह्नवीतटम्।
रम्या सरिद्वरा तत्र धर्मस्तिष्ठति देहवान्।।28।।
केनेदं निर्मितं तीर्थं केनेदं ख्यापितं भुवि।
तत्सर्वं श्रोतुमिच्छामि पुरावृत्तं शुभप्रदम्।।29।।

सुधामा बजलाह। (---) गंगाक तट रमणीय अछि। ओतए महानदी गंगा रमणीय अछि। ओतए धर्मक साक्षात् वास अछि। ई तीर्थ कें स्थापित कएल आ के एकरा संसार में प्रसिद्ध कएल, ई सभटा शुभ पुरातन कथा हम सुनए चाहैत छी।

गुरुरुवाच

कश्चिद् वैदेहको राजा प्रजापालनतत्परः।
धर्मिष्ठः साधुशीलश्च बभूव भुवि विश्रुतः।।30।।
वार्द्धक्ये ज्येष्ठपुत्राय राज्यं दत्वा विधानतः।
गन्तुं तीर्थानि भूयांसि मुक्तिक्षेत्राणि भूतले।।31।।
स च विप्रं पुराणज्ञं धर्मकर्मबहुश्रुतम्।
कृत्वा सहायं प्रययौ तीर्थानि सपरिच्छदः।।32।।

गुरु बजलाह। कोनो समयमे एकटा धार्मिक एवं नीक स्वभाव वला पृथ्वीपर विख्यात मैथिल राजा रहथि जे नीक जकाँ प्रजाक पालन करैत रहथि। जखनि ओ बूढ़ भेलाह तँ अपन जेठ बेटा कें विधानपूर्वक राज्य दए मुक्ति देनिहार तीर्थमे जेबाक इच्छा कएलनि। ओ पुराण जननिहार आ धर्म-कर्मक ज्ञाता विद्वान् ब्राह्मण कें संग लए अपन परिजनक संग तीर्थयात्रा पर निकललाह।

शाल्मली तरुसंच्छन्ने स्नानार्थं समुपागतः।
दृष्ट्वाश्रमान् मुनीनां तु रेमे स मन्त्रिभिः सह।।33।
त्रिरात्रं संव्यतीयाय तत्र कृत्वा निजाश्रमम्।
तेन मार्गाश्च कृताः तीर्थिकाश्च प्रतिष्ठिताः।।34।।
तस्माच्छेमलग्रा+ भूतले[23] सुप्रतिष्ठितः।
चत्वारो मठास्तत्र राज्ञा निर्मिताः शुभाः।।35।।

---

22. सुझाओल गेल पाठ- सुरम्यः शेमलग्रामः। शेमलग्राम रमणीय अछि।
23. सुझाओल गेल पाठ- तस्माच्छेमलग्रा+ भूतले। तें पृथ्वी पर शेमलग्राममे।

ओ जखनि सिमरक गाछ सँ घेरल तट पर स्नान करबाक लेल अएलाह तँ एतए मुनि लोकनिक आश्रम देखि मन्त्रीसभक संग ओतए रमि गेलाह। ओतए अपन आश्रम स्थापित कए ओ तीन राति रहलाह। एतए बाट बनवओलनि आ तीर्थ-पुरोहित (पण्डा) सभकें बसओलनि। ओहि दिन सँ सेमलग्राम एहि पृथ्वीपर स्थापित भेल। ओतए राजा चारि मठ सेहो बनवाओल।

समुपोष्य त्रिरात्रं स नावा काशीपुरीं ययौ।
स्थित्वा तत्र विधानेन प्रयागं प्राप्तवान् ततः।।36।।
++रार्के[24] वसन् तत्र मासं यावद्विधानतः।
विप्रान् संतोष्य दानेन स्वदेशार्थं परावृतः।।37।।

ओहिठाम तेराति कए नावसँ काशी गेलाह ओतहु विधानपूर्वक बिलमि प्रयाग पहुँचलाह। प्रयागमे मकर राशिमे सूर्यक रहलापर एक मास धरि रहि ब्राह्मणलोकनिकें दान दए संतुष्ट कए अपन देश धुरए लगलाह।

++वान्[25] वामनक्षेत्रं सरयूगंगसंगमे।
स्नात्वा तत्र बलिग्रामे तेने विष्णुमहामखम्।।38।।
यत्र साक्षात्स्वयं विष्णुर्बलिं बद्ध्वा महामखे।
मुमोच लक्ष्मीं यत्नेन बलिनापहृतं पुरा।।39।।
अमायां कार्तिके मासि मथितक्षीरसिन्धुजाम्।
यज्ञं कृत्वा नरस्तत्र साक्षान्नारायणो भवेत्।।40।।
लक्ष्मीपतित्वं लभते नात्र कार्या विचारणा।
इदं विष्णुरिति ख्यातं मन्त्रं जप्त्वायुतं पुनः।।41।।
दशांशं हवनं कृत्वा तर्पणं तद्दशांशकम्।
दशांशविधिना तत्र मार्जनं विप्रभोजनम्।।42।।
कृत्वा विष्णुमखं धीमान् भोगं मोक्षं च विन्दति।

ओ मार्गमे सरयू आ गंगाक संगम पर वामन क्षेत्र पहुँचलाह। ओतए स्नान कए बलिग्राममे विशाल यज्ञ कएलनि। जतए प्राचीनकालमे स्वयं भगवान् विष्णु राजा बलिकें महायज्ञमे बाँधि बलिक द्वारा अपहृता लक्ष्मीकें कार्तिक मासक अमावस्या अर्थात् दीपावलीक दिन छोड़ओने रहथि जे लक्ष्मी समुद्रमंथनसँ निकललि रहथि। एहि स्थान पर यज्ञ कए लोक साक्षात् नारायण भए जाइत छथि, ओ धनवान् होइत छथि- एहिमे संदेह नहि। इदं विष्णुः इत्यादि प्रसिद्ध मन्त्रक दस हजार जप कए ओकर दशांश हवन करी। हवनक दशांश तर्पण करी आ एही दशांश विधिसँ मार्जन आ ब्राह्मण-भोजन कराबी। एहि रूपें विष्णुयज्ञ कंलासँ भोग आ मोक्ष दुनू भेटैत अछि।

---

24. सुझाओल गेल पाठ- मकरार्के। मकरमे सूर्यक रहलापर अर्थात् माघ मासमे।
25. सझाओल गेल पाट- गतवान्। गेलाह

ओ जखनि सिमरक गाछ सँ घेरल तट पर स्नान करबाक लेल अएलाह तँ एतए मुनि लोकनिक आश्रम देखि मन्त्रीसभक संग ओतए रमि गेलाह। ओतए अपन आश्रम स्थापित कए ओ तीन राति रहलाह। एतए बाट बनवओलनि आ तीर्थ-पुरोहित (पण्डा) सभकें बसओलनि। ओहि दिन सँ सेमलग्राम एहि पृथ्वीपर स्थापित भेल। ओतए राजा चारि मठ सेहो बनवाओल।

समुपोष्य त्रिरात्रं स नावा काशीपुरीं ययौ।
स्थित्वा तत्र विधानेन प्रयागं प्राप्तवान् ततः।।36।।
++रार्के[24] वसन् तत्र मासं यावद्विधानतः।
विप्रान् संतोष्य दानेन स्वदेशार्थं परावृतः।।37।।

ओहिठाम तेराति कए नावसँ काशी गेलाह ओतहु विधानपूर्वक बिलमि प्रयाग पहुँचलाह। प्रयागमे मकर राशिमे सूर्यक रहलापर एक मास धरि रहि ब्राह्मणलोकनिकें दान दए संतुष्ट कए अपन देश धुरए लगलाह।

++वान्[25] वामनक्षेत्रं सरयूगंगसंगमे।
स्नात्वा तत्र बलिग्रामे तेने विष्णुमहामखम्।।38।।
यत्र साक्षात्स्वयं विष्णुर्बलिं बद्ध्वा महामखे।
मुमोच लक्ष्मीं यत्नेन बलिनापहृतं पुरा।।39।।
अमायां कार्तिके मासि मथितक्षीरसिन्धुजाम्।
यज्ञं कृत्वा नरस्तत्र साक्षान्नारायणो भवेत्।।40।।
लक्ष्मीपतित्वं लभते नात्र कार्या विचारणा।
इदं विष्णुरिति ख्यातं मन्त्रं जप्त्वायुतं पुनः।।41।।
दशांशं हवनं कृत्वा तर्पणं तद्दशांशकम्।
दशांशविधिना तत्र मार्जनं विप्रभोजनम्।।42।।
कृत्वा विष्णुमखं धीमान् भोगं मोक्षं च विन्दति।

ओ मार्गमे सरयू आ गंगाक संगम पर वामन क्षेत्र पहुँचलाह। ओतए स्नान कए बलिग्राममे विशाल यज्ञ कएलनि। जतए प्राचीनकालमे स्वयं भगवान् विष्णु राजा बलिकें महायज्ञमे बाँधि बलिक द्वारा अपहृता लक्ष्मीकें कार्तिक मासक अमावस्या अर्थात् दीपावलीक दिन छोड़ओने रहथि जे लक्ष्मी समुद्रमंथनसँ निकललि रहथि। एहि स्थान पर यज्ञ कए लोक साक्षात् नारायण भए जाइत छथि, ओ धनवान् होइत छथि- एहिमे संदेह नहि। इदं विष्णुः इत्यादि प्रसिद्ध मन्त्रक दस हजार जप कए ओकर दशांश हवन करी। हवनक दशांश तर्पण करी आ एही दशांश विधिसँ मार्जन आ ब्राह्मण-भोजन कराबी। एहि रूपें विष्णुयज्ञ कंलासँ भोग आ मोक्ष दुनू भेटैत अछि।

---

24. सुझाओल गेल पाठ- मकरार्के। मकरमे सूर्यक रहलापर अर्थात् माघ मासमे।
25. सझाओल गेल पाट- गतवान्। गेलाह

सोऽपि राजा विधानेन यज्ञं भूरिदक्षिणम्।।43।।
समाप्य प्रययौ नावायोध्यां मुक्तिप्रदां ततः।
नदीमाश्रित्य सरयूं मासेनैकेन लब्ध्वान्।।44।।
सेवमानः शनैर्भक्त्या सरित्तीरस्थितान् मुनीन्।
अयोध्यायां सरित्तीरे स्वर्गद्वारे नराधिपः।।45।।
विप्रेभ्यो दक्षिणां दत्वा गत्वा रामालयं प्रति।
निलीनं जननीक्रोडे नीलाम्बुजसमप्रभम्।।46।।
प्रणम्य राघवन्तत्र जन्मभूमौ विधानतः।
कृत्वा प्रदक्षिणं सम्यक् स्थापयामास मन्दिरे।।47।।
किंकिर्णी हाटकमयीं शिंजितां चपलां शुभाम्।
यदि रामालये कश्चिद् दद्यात् स्वर्णघण्टिकाम्।।48।।
न तत्कुलविनाशः स्यात् सर्वे स्युः पुत्रपौत्रिणः।
न काचिद्विधवा नारी तस्य वंशे भविष्यति।।49।।
स्वांके निधाय तनयं कौशल्येव राघवम्।
मोदते तद्गृहे नारी सर्वाभरणभूषिता।।50।।
घृतदीपं प्रतिष्ठाप्य राजा तत्र प्रणम्य च।
चत्वरे श्राद्धमकरोत् पूर्वजानां कृते ततः।।51।।
कृतकर्मा नृपस्तत्र नत्वा विष्णुहरिं पुनः।
लोकनाथं शिवं नत्वा पर्व्वते विजने वने।।52।।
सरयूतीरमाश्रित्य गोप्रतारं गतः पुनः।
गाः पस्पर्श बहुशो घ++++म[26] भूषिताः।।53।।
कार्तिकैकादशीं प्राप्य शुक्लपक्षे नराधिपः।
विष्णोर्जागरणं कृत्वा स्वदेशं प्राचलन्मुदा।।54।।

ओहो राजा विधानसँ पर्याप्त दक्षिणावला यज्ञ समाप्त कए मुक्ति देनिहारि अयोध्या नगरीक दिस सरयू नदीक बाटें नावसँ चललाह आ एक मासमे धीरे धीरे तीर पर बसनिहार मुनिलोकनिक भक्तिपूर्वक सेवा करैत पहुँचि गेलाह। ओ राजा अयोध्यामे नदीक तट पर स्वर्गद्वार घाट पर ब्राह्मणकें दक्षिणा दए रामालय जाए नीलकमलक समान आभा वला एवं माताक कोरामे स्थित श्रीरामकें जन्मभूमिमे विधानपूर्वक प्रणाम कएल। ओ शास्त्रीय विधिसँ प्रदक्षिणा कए रुनझुन बजैत चंचल आ सुन्दर सोनाक घंटी मन्दिरमे स्थापित कएल। जे केओ रामालयमे सोनाक छोट घंटी समर्पित करैत अछि ओकर कुलक कहियो नाश नहि होइत अछि। ओकर वंशमे केओ विधवा नहि होइत अछि। ओहि घरक नारी श्रीराम कें कोरमे लेनिहारि कौशल्या जकाँ अपन कोरामे पुत्रकें लए सभ गहनासँ

26. सुझाओल गेल पाठ- घटोध्न्यो हेम। घैलसन थन वाली आ सोना सं सजल।

सजल प्रसन्न रहैत अछि। तखनि राजा मन्दिरमे घीक दीप स्थापित कए फेर प्रणाम कए चबूतरा पर अपन पूर्वजक लेल श्राद्ध कएल। ओतए सभटा कार्य संपन्न कए विष्णुहरिकें प्रणाम कए पर्वत पर निर्जन वनमे लोकनाथ शिवकें प्रणाम कए सरयूक तटपर गोप्रतार गेलाह जतए कतिपय (---) सुसज्जित गाय दान कएल।

कार्तिक शुक्ल पक्षमे एकादशी अएल। पर राजा भगवान् विष्णुक जागरण केलनि आ प्रसन्नतापूर्वक अपन देशक दिस चललाह।

धारानुगा+[27] शीघ्रेण प्राप त्रिपथगां नदीम्।
ययौ प्राचीं वेगवतीं शुभामाश्रित्य जाह्नवीम्।।55।।
मार्गे नारायणं देवं प्रणम्य च पुनः पुनः।
संप्राप हरिहरक्षेत्रं गण्डकी तीरमाश्रितम्।।56।।
क्षेत्रान्नृसिंहाच्छोणश्च यत्र गच्छति जाह्नवीम्।
विष्णुगण्डस्थलाज्जाता गण्डकी यत्र संगता।।57।।
स तीर्त्वा गण्डकीं सद्यः स्नात्वा कोणह्रदे जले।
सौवर्णे कमलाकीर्णे नक्रग्राहझखाकुले।।58।।
स गौरीशंकर देवं संपूज्य विधिवन्नृपः।
त्रिरात्रं संव्यतीयाय स्वदेशमगमत्ततः।।59।।

धाराक अनुकूल भेलाक कारणें शीघ्र ओ गंगा नदीक कछेर पर पहुँचि गेलाह आ वेगवती गंगाक बाटें पूब दिस चललाह। मार्गमे नारायण देव कें बेर बेर प्रणाम कए गंडकीक किनारमे हरिहर क्षेत्र पहुँचलाह। ओतए नृसिंह क्षेत्रसँ सोन नदी आबि गंगामे मिलैत अछि आ भगवान् विष्णुक कपोल प्रदेश सँ निकलल गंडकी सेहो मिलैत अछि। ओ लगले गंडकी कें पार कए सोनहुला कमलक फूल सँ तथा नक्कार, गोहि आ माछ सँ भरल कोणह्रदमे स्नान कए विधानपूर्वक गौरीशंकरदेवक पूजा कए ओतए तेराति कए अपन देशक दिस चललाह।

संप्राप्य शेमलग्रामं परं मुदमवाप सः।
वीक्ष्य हर्षान्विताः सर्वे तीर्थिकाः समुपागतम्।।60।।
मंगलानि समाचक्रुः स्वस्तिवाचनतत्पराः।
राजा स्वदेशं सम्प्राप्य स्वस्थोऽभूद् विनयान्वितः।।61।।
तस्मिन्नेव क्षणे दिक्षु भयार्तानां भयंकरः।
सम्मर्दः प्रथितस्तत्र जनानां शोककारकः।।62।।
सर्वे विस्मयं जग्मुः श्रुत्वा कोलाहलं परम्।
किमभूदिति संज्ञातुं भेजिरे धावकाः दिशः।।63।।

---

27. सुझाओल गेल पाठ- धारानुगोऽति। धारानुगः अति। धाराक अनुकूल गेनिहार अतिशीघ्र।

ते चागत्य तुरुष्कानां लुण्ठकानां भयंकरम्।
वृत्तान्तं कथयामासुर्जनसंहारकारकम्।।64।।
तीर्थयात्राश्रमक्लान्तो राजाभूदति दुःखितः।
शस्त्रास्त्ररहिताः सर्वे हताशाः ग्लानिमादधुः।।65।।

ओ शेमलग्राम पहुँचि अत्यन्त प्रसन्न भेलाह। हुनका आएल देखि तीर्थ-पुरोहित सभ सेहो प्रसन्न भेलाह। तीर्थ-पुरोहित स्वस्तिवाचन करैत मांगलिक कार्य सभ सम्पन्न कएल। विनयी राजा सेहो अपन देश घुरि स्वस्थ भेलाह। एतबहिमे चारू दिशामे डेराएल लोकसभक आसमद्दं चारूकात पसरि गेल जाहिसँ सभकें कष्ट भेलनि। एतेक पैघ आसमद्दं सुनि सभ कें आश्चर्य भेलनि आ दौराहा सिपाही चारूकात बात बुझबाक लेल दौड़ि पड़ल। ओ दौराहा सभ आबिकें लुटिहारा तुर्क सभक द्वारा कएल गेल जनसंहारक गप्प सुनाओल। तीर्थयात्राक श्रमसँ थाकल राजा अत्यन्त दुःखी भेलाह। अस्त्र-शस्त्र तँ नहि छलनि तें सभ हताश भए दुःखी भेलाह।

दृष्ट्वा भीतं नृपं प्राहुर्मुनयस्ते तपोधना।
शोकं मा कृथाः राजन् धैर्यं धेहि महामते।।66।।
यास्यन्ति संक्षयं शीघ्रं तुरुष्काः धनलुण्ठकाः।
आगमिष्यन्ति ते शीघ्रमत्रैव सपरिच्छदाः।।67।।
अस्य तीर्थ प्रभावेण सर्वे यास्यन्ति संक्षयम्।
शाल्मलीवृक्षसंच्छन्ने भ्रान्ताः यास्यन्ति निर्बलाः।।68।।
विष्णोर्माया भगवती यया संमोहितं जगत्।
मोहयिष्यति तान् पापानत्रैव शाल्मलीवने।।69।।
समुद्रमथनाज्जातमपहृत्य सुधाघटम्।
दानवा आगता अत्र पूर्वकाले नृपोत्तम।।70।।
वनेऽस्मिन् तेऽपि दिग्भ्रान्ताः सुधां पातुं कृतोद्यमाः।
मोहिन्या मोहिताः सर्वे तेनुर्वैरं परस्परम्।।71।।
विष्णोः प्रसादादत्रैव पश्चाद्देवगणास्ततः।
चक्रः सम्यक् सुधापानं दानवाश्च प्रवंचिताः।।72।।

राजाकें भयभीत देखि तपस्वी लोकनि हुनका कहलथिन्ह जे हे राजा! शोक नहि करू, धैर्य धारण करू। सभटा लुटिहारा तुर्क शीघ्रहि नष्ट होएत। एतए ओ सभ शीघ्रहि पहुँचएबला अछि। एहि तीर्थक प्रभावसँ सभ नष्ट भए जाएत। सिमरक गाछसँ भरल एहि वनमे भोतिआ कए ओ सभ बलहीन भए जाएत। विष्णुक माया भगवती जे संसारकें मोहित कएने छथि ओ ओहि सभ पापीकें एहि सिमरक जंगलमे मोहित करतीह। हे राजा, पूर्वकालमे समुद्र-मंथन सँ उत्पन्न अमृत-कलश छीनि कए दैत्यसभ एतहि आएल छल। एहि जंगलमे ओ सभ भोतिआ कए अमृत पीबाक जतन कएलक आ मोहिनी द्वारा मोहित

भए अपनहिमे लड़ए लागल। भगवान् विष्णुक कृपासँ बादमे देवतालोकनि नीक जकाँ अमृतपान कएल आ दानव सभ ठकल गेल।

ततः कालादिदं तीर्थं ख्यातं भुवि महामते
तस्मान्नाद्य भेतव्यं तुरुष्कास्तु परस्परम्।।73।।
युद्धं कृत्वा स्वयं सद्यो यास्यन्ति धनवंचिताः।।

हे बुद्धिमान्, एही कालसँ ई तीर्थ संसारमे विख्यात भेल। तें अहाँकें डेरेबाक काज नहि। ई तुर्कसभ अपनहिमे लड़त आ धन छोड़ि छाड़ि नष्ट भए जाएत।

राजोवाच
अहो किमिति माहात्म्यं कथितंमे त्वया मुने।
तीर्थस्यास्य पुरावृत्तं भीतिर्मे निर्गता क्षणात्।।74।।
अथान्यदपि माहात्म्यं यदि तीर्थस्य विद्यते।
तदहं श्रोतुमिच्छामि पुरावृत्तान्तदर्शन।।75।।

राजा कहलनि। हे मुनि, अहो, अहाँ एहि तीर्थक केहन सुन्दर माहात्म्य आ प्राचीन कथा कहलहुँ जे हमर लगले डर निकलि गेल। प्राचीन कथाक ज्ञाता हे मुनिलोकनि, आओरो जँ एहि तीर्थक कोनो माहात्म्य होए तँ ओ हम सुनए चाहैत छी।

मुनिरुवाच
अस्य तीर्थस्य माहात्म्यं स्वयं रुद्रेण भाषितम्।
गौर्या पृष्टो हिमवति कैलाशशिखरे पुरा।।76।।
धन्वन्तरित्रायोदश्याः माहात्म्यं प्रथितं भुवि।
कार्तिके कृष्णपक्षे तु सवितोदयगामिनी।।77।।
त्रयोदशी तिथिः साक्षाद्धनारोग्यविवर्द्धिनी।
घटं संस्थाप्य यः कश्चित्पूजां +त्वा[28] विधानतः।।78।।
आत्मानमभिषिंच्यैव रोगमुक्तो भवेन्नरः।
एतद् व्रतस्य माहात्म्यं रुद्रेण प्रथितं भुवि।।79।।
तदहं कथयिष्यामि शृणु राजन् समासतः।।
इति रुद्रयामलसारोद्धारे तीर्थयात्राविधाने प्रथमोऽध्यायः।

मुनि बजलाह। स्वयं भगवान् शिव कैलासक शिखर पर गौरीक पुछलापर एहि तीर्थक माहात्म्य प्राचीन कालमे कहलनि जे धन्वन्तरि त्रयोदशीक माहात्म्यक रूपमे संसारमे प्रसिद्ध भेल। कार्तिक मासक कृष्णपक्षक सूर्योदयगामिनी त्रयोदशी साक्षात् धन आ आरोग्य बढ़वैत अछि। ओहि दिन कलश स्थापित कए, विधानसँ पूजा कए स्वयं ओहि जलसँ मार्जन कए मनुष्य रोगसँ मुक्त होइत अछि। एहि व्रतक माहात्म्य जे भगवान् शंकर कहलनि से हम कहैत छी। एकरा संक्षेपमे सुनू।

रुद्रयामलसारोद्धारमे तीर्थयात्राविधानमे पहिल अध्याय समाप्त भेल।

अतः परं वैद्यनाथयात्राविधानम्।
संप्राप्य जीर्णमादर्शं बुद्ध्या संशोध्य यत्नतः।
लिखितं जीवनाथेन तेघराग्रामवासिना।।
1310 साल मार्ग शुक्ल एकादशी दिने। लेखकस्य पाठकस्य च शुभं भूयात्।।
राम।। राम।।
रामो राज्यमणिः सदा विजयते रामं रमेशं भजे
रामेणाभिहता निशाचरचमू रामाय तस्मै नमः।
रामान्नास्ति परायणं परतरं रामस्य दासोऽस्म्यहं
रामे चित्तलयः सदा भवतु मे हे राम मामुद्धर।।
हे राम। हे राम। हे राम।।

एकर बाद वैद्यनाथ यात्राक विधान कहल जा रहल अछि। पुरान आ फाटल हस्तलेख पाबि अपन बुद्धिसँ संशोधन कए तेघरा गामक निवासी जीवनाथक द्वारा ई लिखल गेल। 1310 साल मार्ग शुक्ल एकादशी दिन। लेखक आ पाठकक शुभ हो। राम। राम।

द्वितीयोऽध्यायः

श्रीराम
श्रूयते च पुराविद्भिः शिवाराधनतत्परैः।
माहात्म्यं वैद्यनाथस्य तन्मे वद विचक्षण।।1।।
कथं यात्रा प्रकर्तव्या कर्तव्यं किं च मन्दिरे।
किं तत्स्थानमाहात्म्यं श्रोतुमिच्छामि विस्तरात्।।2।।

हे विद्वान्, भगवान् शिवक उपासना में लीन रहनिहार पुराणक ज्ञाताक मुँहसँ वैद्यनाथक जे माहात्म्य कहल गेल अछि से हमरा कहू। वैद्यनाथ यात्रा कोना करबाक चाही, मन्दिरमे पहुँचि की करबाक चाही आ एहि स्थानक की माहात्म्य अछि, ई सभ विस्तारसँ सुनए चाहैत छी।

गुरुरुवाच
साधु पृष्टं त्वया वत्स लोकानां धर्ममिच्छता।
वैद्यनाथस्य माहात्म्यं तच्छृणुष्व महामते।।3।।
मन्दारस्य गिरेः पार्श्वे दक्षिणस्यां सनातनः।
वने सतीचिताभूमौ शिवस्तिष्ठति मूर्तिमान्।।4।।
ज्योतिर्लिंगमयस्तत्र गुहायां सम्प्रतिष्ठितः।
स्नपनं कुरुते तस्य यः कश्चिद् गांगवारिणा।।5।।
तस्य सर्वार्थसिद्धिः स्यात् सत्यं सत्यं न संशयः।
कैलाशे या शिवमयी मूर्तिः सर्वकामदा।।6।।

सैवात्र राजते शक्त्या सह देवस्य शाश्वती।
पुरा द्विजवरः कश्चिद् गृही दीनोऽनपत्यभाक्।।7।।
उपदिष्टो गतस्तत्र नीत्वा गंगाजलं महत्।
दोलायां सम्प्रतिष्ठाप्य गांगं वारि विचक्षणः।।8।।
पत्न्या सह गतस्तत्र शिवमेकमनुस्मरन्।
वनाद् वनानि प्रविशन् पार्वतात्पार्वतानि च।।9।।
समुल्लँघ्य प्रयत्नेन फलाहारः कृतव्रतः।
संपूज्याजगबीनाथं साक्षिणं जलसंग्रहे।।10।।
जलादानविधौ विप्रः प्रार्थयामास जाह्नवीम्।
गंगे देवि नमस्तुभ्यं जटाजूटाग्रचारिणि।।11।।
वैद्यनाथाभिषेकार्थं जलं मे देहि जाह्नवि।
मन्त्रोणानेन विधिवज्जलं नीत्वा घटे शुभे।।12।।
पर्यंके न पुटितं कृत्वा भुक्त्वा प्राचलन्मुदा।
गंगातीरान्न गन्तव्यमभुक्तैर्धार्मिकैर्जनैः।।13।।
अभावे वा व्रतविधौ कुर्याद् वा वारिसेवनम्।
अनेन जलपानेन व्रतभंगो न विद्यते।।14।।
तस्मात् स प्रचुरं भुक्त्वा पत्न्या सह विधानतः।
स्कन्धे दोलां समादाय प्रययौ दक्षिणां दिशम्।।15।।
शम्भोर्नाम जपन्नुच्चैः सपत्नीकः पदे पदे।
नदीं सम्प्राप्य सायाह्ने गत्वा योजनत्रयम्।।16।।
व्यतीत्य तत्र रजनीं स्नात्वा प्रातर्नदीजले।
दोलां गंगाजलयुतां पूजयामास धर्मवित्।।17।।
नदीमल्पजलां पद्भ्यां पारं गत्वाति+++।
++ + + + + +

गुरु बजलाह। बाउ, लोकसभक धर्म चाहनिहार अहाँ ठीके वैद्यनाथक माहात्म्य पुछलहु। हे बुझनुक, अहाँ सुनू। मंदार पर्वत कातमे दक्षिणमे सतीक चिताभूमि पर वनमे सनातन शिव साक्षात् वास करैत छथि। ओ ज्योतिर्लिंगक रूपमे गुफामे प्रतिष्ठित छथि। जे केओ गंगाजलसँ हुनक स्नँपन करैत छथि हुनक सभटा कामना सिद्ध होइत छन्हि एहिमे संदेह नहि। कैलास पर जे सभ कामना पुरओनिहारि कल्याणमयी मूर्ति अछि, ओएह एतए शक्तिक संग एतए शाश्वत रूपमे विद्यमान् अछि। प्राचीन कालमे श्रेष्ठ निर्धन ब्राह्मण गृहस्थ, जे अपुत्र रहथि ओ किनकहु कहलापर पवित्र गंगाजल लए ओतए गेलाह। ओ विद्वान् कामरुमे गंगाक जल लए एकाग्र भए भगवान् शंकरक नाम लैत पत्नीक संग ओतए गेलाह। पहाड़ पर स्थित वन सभकें पार कए दोसर वनमे जतन सँ पहुँचैत ओ नियम सभक

पालन करैत फलाहार कए ओतए पहुँचलाह। जल भरबाक काल साक्षीक रूपमे अजगवीनाथक पूजा कए ओ गंगाक प्रार्थना कएल। ''भगवान् शंकरक जटाजूट पर विचरण करएवाली हे भगवती गंगा, अहाँकें प्रणाम। हे गंगे, वैद्यनाथक अभिषेक करबाक लेल हमरा जल दिय।'' एहि मन्त्रसँ विधानपूर्वक सुन्दर घैलमे जल लए ओकरा गंगाक पाँक सँ बंद कए भोजन कए ओ चललाह। धार्मिक लोक गंगाक तटसँ बिना भोजन कएने नहि चलथि। भोजनक लेल किछु नहि रहला पर अथवा व्रत रहला पर गंगाजल पीबाक चाही। एहि तरहें गंगाजल पीला सँ व्रतभंग नहि होइत अछि। तैं ओ पर्याप्त भोजन कए कान्ह पर कामरु लए दक्षिण दिशाक दिस डेग डेग पर भगवान् शंकरक नाम लैत पत्नीक संग चललाह। धर्मकें जननिहार ओ बारह कोस जाए संध्यामे एक नदी पाबि ओतहि राति बिताए फेर प्रातःकाल नदीक जलमे स्नान कए गंगाजलसँ युक्त कामरुक पूजा केलनि आ कम जल वला ओहि नदीकें पार कए------।

एतहि ई समाप्त भए जाइछ।

एहि पाण्डुलिपिक विषय-वस्तु सँ बुझाइत अछि जे 14-15 शतीक मध्य कोनो मैथिल विद्वान् मिथिलामे प्रसिद्ध तीर्थस्थान सभक वर्णन करैत एकटा विशाल ग्रन्थ लिखने छल होएताह। तें एकर आरो अंश भेटबाक प्रबल संभावना अछि। मिथिलाक विभिन्न भागमे छिड़िआएल आ अनधीत पाण्डुलिपि सभक अध्ययन एहि दिशामे उपयोगी भए सकैत अछि।

....

मैथिली साहित्य संस्थानक मुख्य उद्देश्य

(क) मैथिली भाषा एवं साहित्यक सर्वांगीण विकासक प्रयास

(ख) 'मिथिला भारती' नामक त्रैमासिक शोध साहित्यिक पत्रिकाक प्रकाशन एवं विक्रय

(ग) मिथिला, मैथिल एवं मैथिलीक संबंध मे अनुसंधान एवं शोध कार्य

(घ) संस्कृति, साहित्य एवं कला संबंधी विषय पर अनुसंधान, अनुवाद, गोष्ठी, प्रकाशन, व्याख्यान, पुरातात्त्विक अन्वेषण एवं उत्खनन कार्य

(ङ.) लोक कला, हस्त कला, शिल्प कला एवं लोक भाषाक विकास

Printed by:- Shobha Priting Press, Mob.: 9905013128